ईकाई–७

व्यापार और भूमंडलीकरण

१९ वी तथा प्रारंभिक २०वीं शताब्दी में विश्वबाजार का विस्तार और एकीकरण

भूमिका :

आज के अर्थजगत में वाणिज्य और व्यापार के अन्तर्गत आने वाली विश्व बाजार की अवधारणा आधुनिक युग की देन है। परन्तु वैश्विक बाजार के सन्दर्भ में इस व्यवस्था के संकेत प्राचीन काल से ही मिलने आरंभ हो चुके थे। प्राचीन भारत में विकसित सिन्धु घाटी सभ्यता का व्यापारिक सम्बन्ध प्राचीन मिश्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता के साथ था। इस व्यापार का केन्द्र दिलमुन (आधुनिक बहरीन) और मेंलुहा (मकरान

विश्व बाजार-उस तरह के बाजारों को हम विश्व बाजार कहेंगे जहाँ विश्व के सभी देशों की वस्तुएँ आमलोगों को खरीदने के लिए उपलब्ध हो। जैसे– भारत की आर्थिक राजधानी 'मुम्बई'।

वाणिज्यिक क्रान्ति-व्यापार के क्षेत्र में होने वाला अभूतपूर्व विकास और विस्तार जो जल और स्थल दोनों मार्ग से सम्पूर्ण विश्व तक पहुँचा। इसका केन्द्र यूरोप (इग्लैंड) था।

मानचित्र-भारत को विश्व से जोड़ने वाले व्यापारिक मार्ग

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

तट पर स्थित) एक बाजार (बड़ा व्यापारिक केन्द्र) ही था। उस काल में विश्व बाजार का और स्पष्ट प्रमाण अलेक्जेण्ड्रीया नामक बड़ा व्यापारिक केन्द्र की चर्चा के क्रम में मिलता है। यह शहर तीन महादेशो अफ्रीका, यूरोप और एशिया के व्यापारियों का केन्द्र था। इस शहर को लाल सागर के मुहाने पर (वत्तर्मान मिश्र के उत्तरी क्षेत्र) महान यूनानी विश्व विजेता सम्राट सिकन्दर ने स्थापित किया था।

औद्योगिक क्रांति-वाष्प शक्ति से संचालित मशीनो द्वारा बड़े-बड़े कारखानो में व्यापक पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन इसका केन्द्र इंग्लैण्ड था-यह १७५० के बाद आरंभ हुआ।

अलेगजेन्ड्रीया शहर और बाजार

परन्तु आधुनिक काल के उदय के साथ ही भौगोलिक खोजों, पुर्नजागरण तथा राष्ट्रीय राज्यों के उदय जैसी घटनाओ ने जिस वाणिज्यिक क्रांति को जन्म दिया, सही मायने में विश्व बाजार का स्वरूप इसके बाद ही उभरकर सामने आया। इसका पूर्ण विस्तार औद्योगिक क्रान्ति के बाद हुआ। इस क्रान्ति ने बाजार को तमाम आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र बना दिया। इसी के साथ जैसे-जैसे औद्योगिक क्रान्ति का विकास हुआ बाजार का स्वरूप विश्वव्यापी होता चला गया और 20 वी शताब्दी के पहले तक तो इसनें सभी महादेशों में अपनी उपस्थिति कायम कर ली।

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions
Empowering Technologies...

(क) विश्वबाजार का स्वरूप और विस्तार :

उपनिवेशवाद ऐसी राजनैतिक आर्थिक प्रणाली जो प्रत्यक्ष रूप से एशिया और अविकसित अफ्रीक तथा दक्षिण अमेरिका में यूरोपीय देशों द्वारा त्याग किया गया- इसका एक मात्र उद्देश्य था इन देशों का आर्थिक शोषण करना

18 वी सदी के मध्य भाग से इंग्लैण्ड में बड़े-बड़े कारखानो में वस्तुओ का उत्पादन आरंभ हुआ। यह कारखाने बाष्प इंजन से चलते थे। इस प्रक्रिया से वस्तुओ का उत्पादन काफी बढ़ा। उत्पादन के बढ़ते आकार के हिसाव से कच्चे माल की आवश्यकता हुई और तब इंग्लैण्ड ने उ० अमेरिका, एशिया (भारत) और अफ्रीका की ओर अपना ध्यान खीचा। वहाँ उसे पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल और बना-बनाया एक बाजार भी मिला। इसी दो चीजो पर औद्योगिक क्रांन्ति सफल होता इसलिए इंग्लैण्ड इन प्रचुर संसाधनो पर स्थाई अधिकार का प्रयास आरंभ किया। इससे उपनिवेशवाद नामक एक नवीन शासन प्रणाली का उदय हुआ। मैनचेस्टर, लिवरपुल, लंदन इत्यादी बड़े नगरो का उदय इसी का परिणम था जहाँ वस्तुओ का उत्पादन भी होता था और विदेशों में वस्तुओ को बेचा भी जाता। 18 वी और प्रारंभिक 19 वीं शताब्दी का विश्व बाजार ऐसा ही था। विश्व बाजार के इस स्वरूप का आधार था कपड़ा उद्योग।

चित्र-३ : इग्लैण्ड का एक व्यापारिक नगर

गिरमिटिया मजदूर : औपनिवेशिक देशों के ऐसे श्रमिक जिन्हें एक निश्चित समझौता द्वारा निश्चित समय के लिए अपने शासित क्षेत्रों में ले जाते थे, इन्हें मुख्यतः नगदी फसलों-जैसे गन्ना के उत्पादन में लगाया जाता था। भारत के भोजपुरी भाषी क्षेत्रों (पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिम बिहार) पंजाब, हरियाणा से गन्ना की खेती के लिए जमैका, फिजी, त्रिनिदाड एव्र टोवैगो, मॉरिशस आदि देशों में ले जाया गया।

औद्योगिक क्रान्ति के फैलाव के साथ-साथ बाजार का स्वरूप विश्वव्यापी होता गया। इसने व्यापार, श्रमिको का पलायन, और पूँजी का प्रवाह इन तीन आर्थिक प्रवृतियो को जन्म दिया। व्यापार मुख्यत: कच्चे मालो को इंग्लैंड और अन्य यूरोपीय देशो तक पहुँचाने और वहाँ के कारखानो में निर्मित वस्तुओ को विश्व के कोने कोने

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

में पहुँचाने तक सीमित था। श्रमिको के प्रवाह के अन्तर्गत हम देखते है कि औपनिवेशिक देशो (भारत) से लोगो को निश्चित अवधी के लिए एक समझौता (अनुवंध) के तहत यूरोपीय देश अपने यहाँ या फिर अपने प्रभाव वाले क्षेत्रो में ले जाते थे। इन मजदूरो की मजदूरी बहुत कम होती थी तथा इन्हे मुख्यतः कृषि कार्य (नगदी फसलो गन्ना, चाय, तम्बाकू के उत्पादन) में लगाया जाता था। इस तरह के मजदूरो को गिरमिटिया मजदूर नाम दिया गया।

श्रमिको को बड़े पानी के जहाजो पर भरकर लेजाना

पूँजी पलायन के अन्तर्गत यरोपीय देशों के उद्योगपति औद्योगिक क्रान्ति से प्राप्त भारी लाभो को अपने शासित क्षेत्रो में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे रेल लाइन का निर्माण, खदान से कोयला निकालने, चाय कॉफी, रबड़, कपास जैसे नगदी फसलो के उत्पादन इत्यादी में बड़ी मात्रा में पूँजी का निवेश किया। इससे उपनिवेशो की अर्थव्यवस्था प्रत्यक्ष रूप से यूरोप के साथ जुड़ गया। इस प्रकार इन प्रक्रियाओ ने यूरोप केन्द्रित एक विश्वव्यापी अर्थ तन्त्र को जन्म दिया। इसी अर्थतन्त्र को हम विश्व बाजार की संज्ञा देते है।

(ख) विश्व बाजार की उपयोगिता :

आर्थिक गतिविधियों को स्वतंत्र रूप से संचालित होना सुनिश्चित करने के लिए बाजार के स्वरूप का विश्वव्यापी होना आवश्यक होता है। व्यपारियो, श्रमिको, पूँजीपतियो, मध्यमवर्ग तथा आम उपभोक्ताओं के हितो को बाजार का विश्वव्यापी स्वरूप सुरक्षित रखता है। किसानो को अपने उपज का अच्छा रिर्टन (कीमत) प्राप्त होता है, क्योकि बाजार ज्यादा प्रतिस्पर्धी होता है। कुशल श्रमिको को विश्व स्तर पर पहचान तथा महत्व और आर्थिक लाभ इसी वैश्विक बाजार में प्राप्त होता है। रोजगार के नये अवसर विश्व बाजार में सृजीत होता है। आधुनिक विचार और चेतना के प्रसार में भी इसका बड़ा महत्व होता है।

WEB COPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED
© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions
Empowering Technologies...

(ग) विश्व बाजार के लाभ और हानि :

विश्व बाजार ने व्यापार और उद्योग को तीव्र गति से बढ़ाया, व्यापार और उद्योगो के विकास ने पूँजीपति, मजदूर और मजबूत मध्यमवर्ग नामक तीन शक्तिशाली सामाजिक वर्ग को जन्म दिया। आधुनिक बैकिंग व्यवस्था का उदय और विकास इसी के बाद हुआ। भारत जैसे औपनिवेशिक देशो का सीमित मात्रा में ही सही-औद्योगिकरण और आधुनिकीकरण विश्व बाजार के आलोक में ही हुआ। औपनिवेशिक देशो में रेलमार्ग-सड़क, बन्दरगाह, खनन, बागवानी जैसे संरचनात्मक क्षेत्र का विकास हुआ। कृषि उत्पादन के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ, कुछ नवीन फसलो का उत्पादन इसी का परिणम था, जैसे तम्बाकू, रबड़, कॉफी, नील गन्ना इत्यादी कृषि क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन दक्षिण अमेरिका (जो स्पेन का उपनिवेश था) और मैक्सिको में हुआ।

विश्व बाजार ने नवीन तकनीकि को सृजित किया इन तकनीको में रेलवे, वाष्प इंजन, भाप का जहाज, टेलीग्राफ बड़े जलपोत महत्वपूर्ण रहा। इन तकनीकि ने विश्व बाजार और उसके लाभ को कई गुण बढ़ा दिया जैसे 1820 से 1914 के बीच विश्व व्यापार में 25 से 40 गुना वृद्धि हो चुकी थी। इस सम्पूर्ण वैश्विक व्यापार का 60 प्रतिशत हिस्सा कृषि उत्पादो, खनन (कोयला) और कपड़ा का था। शहरी करण का विस्तार और जनसंख्या में महत्वपूर्ण वृद्धि वैश्विक व्यापार का एक बड़ा लाभकारी परिणाम था।

विश्व बाजार के हानि :

साम्राज्यवाद-यूरोपीय देशो द्वारा एशिया और अफ्रीका के क्षेत्रो पर सैनिक शक्ति द्वारा विजय प्राप्त कर उसे अपने प्रत्यक्ष अधीन में रखना।

विश्व बाजार के फैलते स्वरूप ने यूरोपीय देशो में सम्पन्नता के एक नये दौर को पैदा किया लेकिन इस सम्पन्नता के पीछे का सच बहुत कड़वा था। विश्वबाजार ने एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद के एक नये युग को जन्म दिया साथ ही साथ भारत जैसे पुराने उपनिवेशो का शोषण और तीव्र हुआ। उपनिवेशो की अपनी स्थानीय आत्म निर्भर अर्थव्यवस्था जिसका आधार कृषि और लद्यु उद्योग तथा कुटीर उद्योग था, नष्ट हो गया। इन स्थानीय उद्योगों को यूरोपीय देशो ने व्यवस्थित नीति के तहत नष्ट किया, क्योकि इसी पर उनकी औद्योगिक क्रान्ति सफल होती। व्यापार में वृद्धि और विश्व अर्थव्यवस्था के साथ निकटता ने औपनिवेशिक लोगो के आजीविका को छीन लिया। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है जैसे-भारत का कपड़ा उद्योग (जो प्राचीन काल से भारतीय

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions
Empowering Technologies...
© BSTBPC NEVER COPY NOT TO BE PUBLISHED

प्रथम विश्व युद्ध में बर्वाद हो चुका जर्मनी का एक शहर

व्यापार और वाणिज्य का आधार रहा था)। 1800 ई० में जहाँ भारतीय निर्यात में सूती कपड़ा का हिस्सा 30 प्रतिशत था वही 1815 में घटकर 15 प्रतिशत रह गया। 1870 तक आते-आते यह केवल 3 प्रतिशत रह गया। इसके ठीक विपरित कच्चे कपास का भारत से निर्यात 1800 से 1872 के बीच 5 प्रतिशत से बढ़कर 35 प्रतिशत हो गया।

औपनिवेशिक देशो में विश्व बाजार ने अकाल भुखमरी गरीबी जैसे मानवीय संकटो को भी जन्म दिया। जैसे भारत में 1850 से 1920 के बीच कई बड़े अकाल पड़े जिसमें लाखो लोग मर गये। इस बाजार ने साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा को यूरोपीय देशो के बीच पैदा किया। इससे उग्र राष्ट्रवाद ने जन्म लिया। इन दोनो का विनाशकारी परिणाम प्रथम महायुद्ध के रूप में सामने आया। प्रथम विश्व युद्ध ने मानवीय सभ्यता को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया। इसने विश्व के सामने एक ऐसा संकट पैदा किया जिसकी कल्पना विश्व ने नहीं की थी।

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions
Empowering Technologies...

दो महायुद्धो के दरम्यान व्यापार और अर्थव्यवस्था

आर्थिक मंदी : अर्थतन्त्र में आनेवाली वैसी स्थिति जब उसके तीनों आधार कृषि, उद्योग और व्यापार का विकास अवरूद्ध हो जाए। लाखो लोग बेरोजगार हो जाए, बैंकों और कंपनियों का दिवाला निकल जाए तथा वस्तु और मुद्रा दोनों की बाजार में कोई कीमत नहीं रहे।

प्रथम महायुद्ध ने यूरोप की अर्थव्यवस्था को विल्कुल तबाह कर दिया। तत्कालीन विश्व अर्थतन्त्र को नियंत्रित और संचालित करने वाला देश ब्रिटेन और उसके सभी आर्थिक केन्द्र विलकुल नष्ट हो गए। यूरोप के अन्य महत्वपूर्ण अर्थतन्त्र जर्मनी, फ्रांस, इटली इत्यादी भी बहुत ज्यादा प्रभावित हुए। इसके ठीक विपरित संयुक्त राज्य अमेरिका और औपनिवेशिक देशो के अर्थतन्त्र का काफी विकास और फैलाव हुआ; जैसे भारत में इस समय कपड़ा, जूट, खनन आदि क्षेत्रो का विकास भारतीय उद्योगपतियो के प्रयास से हुआ। टाटा, बिड़ला, गोदरेज, जमना लाल बजाज इत्यादी इसी विकास की उपज है।

प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा यूरोप की अर्थव्यवस्था को फिर से खड़ा करने का गंभीर प्रयास किया गया। चूँकि उस समय एकमात्र देश वही था जो यूरोप को पुर्ननिर्मित कर सकता था। उसके प्रयासो से 1920 से 1927 तक यूरोप और अमेरिका में आर्थिक प्रगति काफी हुआ। वहाँ नवीन तकनीकि की उन्नति के आधार पर नये उद्योगो का विस्तार काफी हुआ। अमेरिका के अपने प्रगति से उसके कंपनियो को काफी लाभ हुआ और खुद उसकी सरकार को भी, जिसे वह यूरोपीय देशो को कर्ज देने में लगाया। अमेरिका में तीन क्षेत्र कृषि, आवास और निर्माण (मोटरकार उद्योग) में काफी प्रगति हुआ। परन्तु यह स्थिति लम्बे समय तक नहीं चला, 1929 ई० तक आते-आते दुनिया एक ऐसे आर्थिक संकट में घिर गया जिसका उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था।

(क) आर्थिक मंदी के कारण :

नया शब्द :
शेयर बाजार : वैसा स्थान जहाँ व्यापारिक और औद्योगिक कंपनियों के बाजार मूल्य का निर्धारण होता है ।

1929 के आर्थिक मंदी का बुनियादी कारण स्वंय इस अर्थव्यवस्था के स्वरूप में ही समाहित था। प्रथम महायुद्ध के चार वर्षो में यूरोप को छोड़ कर बाजार आधारित अर्थव्यवस्था का विस्तार होता चला गया, उसके मुनाफे बढ़ते चले गये दूसरी

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE REPUBLISHED
Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

तरफ, अधिकांश लोग गरीबी और अभाव मे पिसती रहे। नवीन तकनीकी प्रगति तथा बढ़ते हुए मुनाफे के कारण उत्पादन में जो भारी वृद्धि हुई उससे ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई कि जो कुछ उत्पादित किया जाता था, उसे खरीद सकने वाले लोग बहुत कम थे।

नया शब्द
सट्टेबाजी : कंपनियों में पूँजी लगा कर उसका हिस्सा खरीदना ताकि उसका मूल्य बढ़े और पुनः उसे बेच देना

कृषि क्षेत्र में अति-उत्पादन की समस्या बनी हुई थी कृषि क्षेत्र में यह अति उत्पादन प्रथम महायुद्ध के बाद भी बना रहा, लेकिन उसे खरीद सकने वाले लोग बहुत कम थे। इससे उन कृषि उत्पादों की कीमते गिरी। गिरती कीमतो से किसानो की आय घटी, अतः इस स्थिति से निकलने के लिए उन्होंने उत्पादन को और बढ़ाया ताकि कम कीमत पर ज्यादा माल बेचकर अपना आय स्तर बनाए रखा जा सके। इसने बाजारो में कृषि उत्पादो की आमद और बढ़ा दी तथा कीमते और नीचे चली गई। कृषि उत्पाद पड़ी-पड़ी सड़ने लगी। इस स्थिति का आकलन करते हुऐ आधुनिक अर्थशस्त्री काडलिफ ने अपनी पुस्तक ''दि कॉमर्स ऑफ नेशन'' मे लिखा है कि विश्व के सभी भागो में कृषि उत्पादन एवं खाद्यानो के मूल्य की विकृति 1929-32 के आर्थिक संकटो का प्रमुख कारण था।

1920 के दशक के मध्य में बहुत सारे देशो ने अमेरिका से कर्ज लेकर अपनी युद्ध से तबाह हो चुके अर्थव्यवस्था को नये सिरे से विकसित करने का प्रयास किया। जब स्थिति अच्छी थी तबतक अमेरिकी पूँजीपतियो ने यूरोप को कर्ज दिये लेकिन अमेरिका के घरेलू स्थिति में संकट के कुछ संकेत मिलने के साथ ही वे लोग कर्ज वापस माँगने लगे। इससे यूरोप के सभी देशो के समक्ष गहरा संकट आ खड़ा हुआ। इस परिस्थिति में यूरोप के कई बैंक डूब गये। महत्वपूर्ण देशो की मुद्रा मूल्य गिर गई। इसमें और बड़ा संकट तब आ गया, जब यूरोप अपने आप को यान्त्रिक उत्पादन पर निर्भर कर लिया। प्रथम माहयुद्ध के बाद इस क्षेत्र में यूरोप का एकाधिपत्य समाप्त हो गया, कनाडा, रूस और औपनिवेशिक देशो से उसे कड़ी चुनौती मिली। रूस और कनाडा ने सस्ते अनाज को उत्पादित किया, जिसके कारण कृषि आधारित यूरोपीय देश तबाह हो गया।

अमेरिका में संकट के लक्षण प्रकट होते ही उसने कुछ संरक्षणात्मक उपाय करने आरंभ किए। आयातित वस्तुओ पर उसने दो गुना सीमा शुल्क लगा दिया, साथ ही आयात की मात्रा को भी उसने सीमित किया। संकट का धीरे-धीरे अन्य देशो में प्रकट होने के साथ ही सभी राज्य यह प्रयास करने लगे कि अपनी आवश्यकता की अधिकांश वस्तुऍ स्वयं के द्वारा ही उत्पादित कर

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE REPUBLISHED
© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

लिया जाए। इस संकुचित आर्थिक राष्ट्रवाद ने विश्व व्यापार के बाजार आधारित व्यवस्था की कमर ही तोड़ दी। आर्थिक मंदी में अमेरिका के बाजारो में शुरू हुआ सट्टे बाजी की प्रवृति भी निर्णायक रहा। प्रथम महायुद्ध के पश्चात् अमेरिका की आर्थिक समृद्धि में काफी वृद्धि हुई जिससे वहाँ के पूँजीपति अपनी अतिरिक्त पूँजी को सट्टा में लगाने के लिए आकर्षित हुए।आरंभ में काफी लाभ हुआ, यह आर्थिक समृद्धि की चरम अवस्था थी। इसके बाद ही वास्तविक संकट उत्पन्न हुआ, जो प्रसिद्ध शेयर बाजार न्यूयार्क स्टॉक एक्सचेंज (बाल स्ट्रीट) के माध्यम से उभरकर सामने आया।

(ख) आर्थिक मंदी का प्रभाव :

नया शब्द :

संरक्षणवाद–अपने वस्तुओं को विदेशी वस्तुओं के आमद से होने वाले नुकसान से उसेबचाने के लिए विदेशी वस्तु पर ऊँची आयात शुल्क लगाना।

इस मंदी का सबसे बुरा असर अमेरिका को ही झेलना पड़ा। मंदी के कारण बैको ने लोगो को कर्जे देना बन्द कर दिया और दिए हुए कर्ज की वसूली तेज कर दी, किसान अपनी उपज को नही बेच पाने के कारण बर्बाद हो गए। कर्ज की कमी से कारोबार ठप पड़ गया इससे बैंको का कर्ज वापस नहीं चुक पाया। बैंको ने लोगो के समानो (मकान, कार, जरूरी चीजो) को कुर्क कर लिया गया। लोग सड़क पर आ गए। कारोबार के ठप पड़ने से बेरोजगारी बढ़ी, कर्ज की वसूली नहीं होने से बैंक बर्बाद हो गए एवं कई कंपनियाँ बंद हो गई। 1933 तक 4000 से ज्यादा बैंक बंद हो चुके थे और लगभग 110000 कंपनियाँ चौपट हो गई थी।

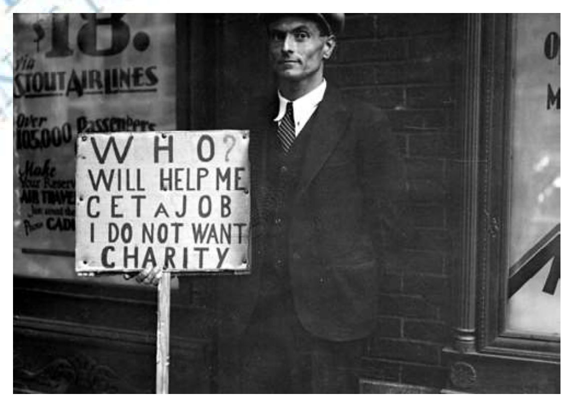

आर्थिक मंदी का प्रभाव

अन्य देशो पर होने वाले आर्थिक प्रभावों में जर्मनी और ब्रिटेन इस आर्थिक मंदी से सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ। फ्रांस अपने आप को इस मंदी से इस लिए बचा पाया क्योकि उसे जर्मनी से काफी मात्रा में युद्ध हर्जाना की राशि प्राप्त हुआ। जर्मनी की स्थिति सबसे खराब रही। युद्ध हर्जाना चुकाने के कारण प्रथम विश्व युद्ध के तुरत बाद के आर्थिक विकास के काल में भी उसकी स्थिति नही बदली। 1922 और 1923 यह दो वर्ष सबसे खराब रहा, उसके मुद्रा मार्क का इन वर्षो में काफी अवमूल्यन हो गया। 1924 के बाद उसकी स्थिति में कुछ परिवर्तन हुआ। इस वर्ष से संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा उसे

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

भारी मात्रा में ऋण प्राप्त हुआ। इससे उसकी स्थिति में काफी सुधार हुआ, परंतु 1929 की महा मंदी ने उसे पुन: 1919 के वर्ष में पहुँचा दिया, लगभग 60 लाख लोग बेरोजगार हो गए, सम्पूर्ण देश अराजकता में डूब गया इसी का लाभ उठा कर हिटलर अपने आप को सत्तासीन किया। 1929 के बाद ब्रिटेन के उत्पादन, निर्यात, रोजगार, आयात तथा जीवन निर्वाह स्तर- इन सब में भी तेजी से गिरावट आयी। लगभग 35 लाख लोग बेरोजगार हो गए। इस महामंदी से निकलने के लिए बाजार अर्थव्यवस्था के प्रतिकूल संरक्षणवाद जैसे कठोर अर्थिक उपाय किए गए जिससे विश्वव्यापार काफी प्रभावित हुआ।

अगर हम इस महामंदी का भारत पर पड़ने वाले प्रभाव को देखें तो यह स्पस्ट होता है कि 20 वी सदी की शुरूआत तक वैश्विक अर्थव्यवस्था कितनी एकीकृत हो चुकी थी। महामंदी ने भारतीय व्यापार को फौरन प्रभावित किया। 1928 से 1934 के बीच देश के आयात निर्यात घटकर लगभग आधी रह गई कृषि उत्पादो की कीमत यहाँ काफी गिर गई, जिसका उदाहरण है 1928 से 1934 के बीच भारत में गेहूँ की कीमत 50 प्रतिशत गिर गया। शहरी लोगो की अपेक्षा गॉव के लोग इस मंदी से ज्यादा प्रभावित हुए। कृषि दाम में कमी के बाबजूद अंग्रेजी सरकार लगान की दर कम करने को तैयार नही थी; जिससे किसानो में असंतोष की भावना बढ़ी। नगदी फसलो को उपजाने वाले किसानो पर इसका प्रभाव विनाशकारी हुआ क्योकि उनका उत्पादन खर्च बहुत ज्यादा होता था और उस अनुपात में फायदा नहीं मिलने पर वे महाजनो के कर्ज में डूबते चले गऐ। इन्ही सालो में पहली बार भारत से सोने का निर्यात होने लगा जो ब्रिटेन अपने कम हो रहे सोने को पूरा करने के लिए कर रहा था। इसी परिप्रेक्ष में हम यह भी कह सकते है कि इस मंदी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन को प्रारंभ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(ग) विश्व बाजार के आलोक में बदलते अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध :

सन् 1920 के बाद जो भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विकसित हुआ उसमें आर्थिक कारको या आर्थिक स्थिति का महत्वपूर्ण स्थान था। 1929 के आर्थिक मंदी को आधार वर्ष मानकर 1920 से 1945 के बीच बनने वाले आर्थिक सम्बन्धो को दो भागो में बॉट कर समझ सकते है। 1920 से 1929 तक का काल सामान्यत: आर्थिक समुत्थान एवं विकास का काल था। प्रथम महायुद्ध के बाद विश्व पर से यूरोप का प्रभाव क्षीण हो गया। यद्यपि उपनिवेशो (एशिया-अफ्रीका) पर उसकी पकड़ बनी रही, लेकिन इस दौर में संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और सोवियत संघ (रूस) ये तीन देश विश्व की सर्वप्रमुख शक्ति के रूप में उभरे। संयुक्त राज्य अमेरिका में युद्ध

WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC
© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

के तुरंत बाद का दो वर्ष आर्थिक संकट का काल था। यह संकट मांग में कमी के कारण उत्पन्न हुआ। इन दो वर्षो में एक लाख लोग बेरोजगार हो गए, श्रमिक हड़तालों का सिलसिला चल पड़ा। 1922 के बाद कुछ स्थिति बदली वहाँ तकनीकी उन्नति के आधार पर औद्योगिक विस्तार काफी हुआ, जिसका प्रमाण है 1928–29 में 50 लाख कार की बिक्री हुई। इसी विकास का एक नकारात्मक परिणाम अमेरिका में यह देखने को मिला कि देश की आर्थिक शक्ति और सत्ता कुछ हाथो में और कम्पनियो के पास केन्द्रित हो गया।

सोवियत रूस और जापान इन दो देशो ने भी 1920 से 1929 के बीच आर्थिक क्षेत्र में काफी प्रगति किया। रूस अपनी नई आर्थिक व्यवस्था को विश्व स्तर पर प्रचारित और प्रसारित करने की कोशिश की तो उधर जापान अपनी आर्थिक प्रगति को बनाये रखने के लिए साम्राज्यवादी महत्वा कांक्षा को आक्रमक रूप दिया जिसका शिकार चीन हुआ। इस काल में भारत और अन्य औपनिवेशिक देशो में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार निर्णायक रूप से हुआ क्योकि प्रथम महायुद्ध के बाद उन्हे आर्थिक संकटो का सामना करना पड़ा । दूसरे, उस समय शासक देशो द्वारा किया गया स्वराज का वायदा पूरा नहीं हुआ।

नया शब्द :
न्यू-डील : जनकल्याण की एक बड़ी योजना से सम्बंधित नई नीति जिसमें आर्थिक क्षेत्र के अलावा राजनीतिक और प्रशासनिक नीतियों को भी नियमित किया गया।

1929 के बाद जो अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध विकसित हुआ उसका एकमात्र उद्देश्य आर्थिक मंदी के दुष्प्रभावो को कम करना या समाप्त करना था। इस महामंदी की शुरूआत अमेरिका से हुआ जो 1933 तक बना रहा। इस बीच अमेरिकी राजनीति में फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट का उदय हुआ (1932 ई० में) । उन्होंने 'नई व्यवस्था' (न्यू डील) नामक नवीन आर्थिक नीतियो को अमेरिका में लागू किया । इसमें जनकल्याण की एक व्यापक योजना शुरू किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य था कृषि और उद्योग में संतुलन लाना, साथ ही साथ मानव समाज और स्वाधीनता को

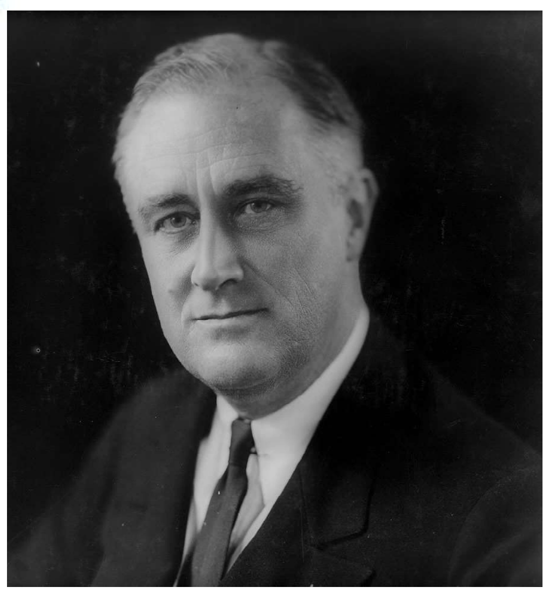

फ्रैंकलीन डी0 रूजवेल्ट अमेरिकी राष्ट्रपति

WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions
Empowering Technologies...

सुरक्षित रखना भी था। जनकल्याण के तहत रेलमार्ग, सड़क, पुल, स्थानीय विकास के कार्य के लिए ऋण दिया गया ताकि व्यवसाय पनप सके और रोजगार भी लोगो को मिले। औद्योगिक क्षेत्र में व्यापार और उत्पादन का नियमन, मजदूरी में वृद्धि, काम के घण्टे तय करना, मूल्यो में वृद्धि को रोकना इत्यादी कार्य किया गया। कृषि क्षेत्र में किसानो की क्रय शक्ति तथा सामान्य आर्थिक स्थिति को युद्ध के पूर्व के स्तर तक ले जाने का प्रयास हुआ।

उधर यूरोपीय देशो में इस मंदी से निकलने के लिए जो प्रयास हुए उसके अन्तर्गत सभी सरकारो ने कड़ा मुद्रा नियन्त्रण स्थपित किया। कृषि प्रधाान पूर्वी यूरोपीय देश (बल्गारिया, हंगरी, रूमानिया, चेकोस्लोवाकिया, सर्बिया) तथा ब्रिटिश कॉम्नबेल्थ (ब्रिटिश साम्राज्य से अलग हुए देश का संघ) देशों ने 1932 में ओटावा समझौता कर अपने आयात निर्यात को सन्तुलित किया। नार्वे स्वीडन जैसे देशों ने ओस्लो गुट जैसे क्षेत्रीय प्रवन्धन भी किया। 1932 में लोजान सम्लेन हुआ जिसमें जर्मनी के क्षतिपूर्ति राशि को कम कर दिया गया, ताकि व्यापार बढ़े। इसी समय फ्रांस के विदेश मंत्री ब्रिया ने पहली बार यूरोप में एक आर्थिक संघ बनाने का सुझाव दिया जो सफल नहीं हो सका। राष्ट्रसंघ के स्तर पर इस संकट के हल के लिए 1933 में लन्दन में एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमे 67 देशो ने भाग लिया। इस सम्मेलन में मुद्रा में स्थिरता लाने और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में संरक्षणवाद की नीति को अन्त कर परस्पर व्यापार और सहयोग की नीति अपनाने की बात कही, जिसका सभी देशो ने समर्थन तो किया लेकिन तत्कालीन राजनैतिक स्थिति में यह सफल नहीं हुआ।

नया शब्द :

अधिनायकवाद : वैसी राजनैतिक प्रशासनिक व्यवस्था जिसमें एक व्यक्ति के हाथ सारी शक्तियाँ केन्द्रित होती है। वह व्यक्ति परिस्थियों का लाभ उठाकर जनता के बीच नायक की छवि बनाता है।

आर्थिक मंदी के आलोक में यूरोप की राजनैतिक स्थिति में दो महत्वपूर्ण परिवर्तन हम देखते है एक रूस में स्थापित साम्यवादी आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था का आकर्षण सम्पूर्ण विश्व में बढ़ा क्योकि वही एक देश था जिसपर इस मंदी का प्रभाव विलकुल नहीं पड़ा, जिससे उसका प्रभाव बहुत बढ़ा। दुसरे, इटली तथा जर्मनी में अधिनायकवादी शासन प्रणाली का उत्कर्ष । चूँकि विश्व के सभी देश आर्थिक मंदी से निवटने में इस कदर उलझ गये कि उन दो देशो में उभरने वाली नवीन राजनैतिक प्रवृत्तियो को देख और समझ नहीं पाये। इटली और जर्मनी में लोक तंत्र की विफलता और अधिनायकवादी तथा तानाशाही तन्त्र का उदय यूरोप के कई और देशो को अपने लपेटे मे ले लिया, जैसे स्पेन, ऑस्ट्रिया, यूनान इत्यादि। यूरोप में आर्थिक मंदी के बाद उदित होने वाले राजनैतिक व्यवस्था अपनी नीतियों से द्वितीय महायुद्ध को अवश्यमभावी बना दिया।

WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC
© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

१९५० के दशक के बाद परिवर्तन

द्वितीय महायुद्ध समाप्त होने के बाद उससे उत्पन्न समस्या को हल करने तथा व्यापक तबाही से निवटने के लिए पुर्ननिर्माण का कार्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आरंभ हुआ। यह प्रयास 1945 ई० के याल्टा सम्मेलन (वर्तमान रूस का स्थान) के निर्णयानुसार अस्तित्व में आया। संयुक्त राष्ट संघ के तत्वावधान में हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपना यह सरा कार्य अपने विभिन्न अनुसंगी संस्थाओ (यूनेस्को, विश्वस्वास्थ संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय इत्यादि के माध्यम से करना आरंभ किया। परन्तु पुर्ननिर्माण का सभी व्यवहारिक काम दो बड़े प्रभावो वाले देश संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ (रूस) के साए में हुआ। ये दोनो देश अलग-अलग आर्थिक व्यवस्था वाले देश थे और उनकी विशेषताओ के आलोक में ही युद्दोत्तर काल के आर्थिक अन्तर्राष्ट्रीय संम्बन्ध विकसित हुए।

दो महायुद्ध के बीच मिले आर्थिक अनुभवो से सबक लेते हुए यह तय किया गया कि बाजार आधारित अर्थव्यवस्था बिना उपभोग के कायम नहीं रह सकती (यह सबक 1929 के महामंदी से मिला)। दुसरी बात यह कि अर्थव्यवस्था की रीढ़, रोजगार के लक्ष्य, को तभी हासिल किया जा सकता है जब सरकार के पास वस्तुओ, पूँजी और श्रम की आवाजाही को नियंत्रित करने की ताकत उपलब्ध हो। अत: द्वितीय महायुद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य यह था कि औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं पूर्ण रोजगार बनाए रखा जाए। चूंकि यह भी महशूश किया गया कि इसी आधार पर विश्वशांति भी स्थापित की जा सकती थी। उपरोक्त आर्थिक विचार और उद्देश्य पर जुलाई 1944 में अमेरिका स्थित न्यू हैम्पशायर ''ब्रेटन वुडस'' नामक स्थान पर संयुक्त राष्ट्र मैद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन हुआ, जिसमें एक सहमति बनी जिसके बाद अन्तर्रास्ट्रीय मुद्रा कोष (आई एम एफ) की स्थापना की गई। युद्दोत्तर पुर्ननिर्माण के लिए पैसे का इंतजाम करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण एवं विकास बैंक (विश्व बैंक) का भी गठन किया गया। इन दोनो वित्तीय संस्थाओ को जुडवॉ संतान के नाम से जाना जाता है। इन दोनो संस्थाओ ने 1947 में औपचारिक रूप से काम करना आरंभ किया, इन दोनो ही संस्थाओ पर ''संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रभाव'' कायम है और आज भी वह अपनी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक नीतियो और सम्बन्धो को निर्धारित करने में इसका भरपूर इस्तेमाल करता है।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED
Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

(क) १९४५ से १९६० के दशक के बीच अनतर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध :

1945 से 1960 के दशक के बीच विकसित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समबन्धो को तीन क्षेत्रों मे विभाजित करके हम देखेगे। 1945 के बाद विश्व में दो भिन्न अर्थव्यवस्था का प्रभाव बढ़ा और दोनो ने विश्व स्तर पर अपने प्रभावो तथा नीतियो को बढ़ाने का प्रयास किया। इस स्थिति से विश्व में एक नवीन आर्थिक और राजनैतिक प्रतिस्पर्धा ने जन्म लिया। सम्पूर्णविश्व मुख्यत: दो गुटो में विभाजित हो गया। एक साम्यवादी अर्थतन्त्र वाले देशो का गुट जिसका नेतृत्व सोवियत रूस कर रहा था, जिसकी विशेषता थी राज्य नियंत्रीत अर्थव्यवस्था, और दुसरा, पूँजीवादी अर्थतन्त्र वाले देशो का गुट जिसकी विशेषता थी, बाजार और मुनाफा आधारित आर्थिक व्यवस्था जिसका नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका कर रहा था। सोवियत रूस, पूर्वी यूरोप (हंगरी, रोमानिया, बुल्गारिया, पोलैण्ड, पूर्वी जर्मनी इत्यादि) और भारत जैसे नवस्वतंत्र देशो में अपनी आर्थिक व्यवस्था को फैलाने का गंभीर प्रयास किया जिसमें पूर्वी यूरोप तथा उत्तर कोरिया, वियतनाम जैसे देशो में उसे पूर्ण सफलता मिली जबकि भारत जैसे देशो को वह सिर्फ अपने प्रभाव में ही ला सका।

दूसरा क्षेत्र, पूँजीवादी अर्थतन्त्र वाले देशो के बीच बनने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों के विकास के अन्तर्गत आएगा। यह क्षेत्र पूर्णत: संयुक्त राज्य अमेरिका के द्वारा संचालित हो रहा था। इसका प्रमुख उद्देश्य साम्यवादी अर्थतन्त्र और विचार के बढ़ते प्रभाव को रोकना था। संयुक्त राज्य अमेरिका ने विश्व के दो क्षेत्रो दक्षिण अमेरिका और मध्य तथा पश्चिम एशिया के तेल सम्पदा सम्पन्न देशो (इराक, इरान साउदी अरब, जर्डन, यमन, सीरिया, लेवनान) में जबरन अपनी नीतियो को थोपने का काम किया। दक्षिण अमेरिकी महादेश के देशो में तो संयुक्त राज्य अमेरिका अपनी खुफिया संस्था - सी०आई०ए० के माध्यम से सैनिक शक्ति के इस्तेमाल की हद तक जाकर अपना प्रभाव स्थापित किया; जबकि पश्चिम मध्य एशिया के देशो पर अपने प्रभाव को अरब बहुल आबादी वाले फिलिस्तिन क्षेत्र में एक नये यहूदी राष्ट्र इजरायल को स्थापित करवाकर, बनाए रखने में सफल हुआ। वस्तुत: अमेरिका यह जानता था कि बाजार आधारित व्यवस्था के आधुनिक रूप की रीढ़ तेल और गैस नामक उर्जा स्रोत है जिसकी कमी उसके सहयोगी अधिकांश पूँजीवादी अर्थव्यवस्था वाले देशो में था। अत: वह हर हाल में इस क्षेत्र पर अपना प्रत्यक्ष प्रभाव बनाए रखना चाहता था। वर्त्तमान में इस क्षेत्र के अधिकांश देशो में इस सम्पदा का दोहन उसकी या उसके सहयोगी राष्ट्रो की कम्पनियों द्वारा किया जा रहा है। यद्यपि एक बात यह भी है कि अमेरिका के

WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED ©BSTBPC
© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

उन क्षेत्रो पर स्थापित इस प्रभाव में वहाँ की अपनी राजनैतिक, प्रशासनिक व्यवस्था का भी बड़ा योगदान है। उन सभी देशो में शासन का स्वरूप राजशाही या तनाशाही सैनिक वाद का है जिसमें जनता की आवाज को सुना नहीं जाता।

इस दूसरे क्षेत्र का दूसरा घड़ा पश्चिमी यूरोप (ब्रिटेन, फ्रांस, प० जर्मनी, बाल्टिक देश स्पेन) था। यहाँ भी 1945 से 1960 के दशक में महत्वपूर्ण आर्थिक सम्बन्धो का विकास हुआ था। इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण विशेषता 1945 के बाद यह रही की विश्व राजतीति और अर्थक्षेत्र में इन देशो का प्रभाव काफी क्षीण हो गया। 1970 तक एशिया और अफ्रीका में स्थापित उनके सारे उपनिवेश उनसे छीन गए, जिसके संसाधनो का दोहन करके उन देशो ने विश्व पर अपना प्रभाव स्थापित किया था। इस स्थिति से निवटने के लिए तथा साम्यवादी विचार के प्रसार को रोकने के लिए समन्वय और सहयोग के एक नवीन युग की शुरूआत किया गया जिसे एकीकरण (यूरोप की) के रूप में हम जानते है। इस दिशा में पहला प्रयास वैसे तो 1945 के पहले फ्रांस के विदेशमंत्री ब्रिया के यूरोपीय संघ के विचार में हम देखते हैं, लेकिन वास्तविक रूप में इसकी शुरूआत 1944 में उभरकर सामने आया जब नीदरलैण्ड बेल्जियम और लजमवर्ग ने 'बेनेलेक्स' नामक संघ बनाया। इसी प्रकार 1948 में ब्रेसेल्स संधि हुआ जिसमें यूरोपीय आर्थिक सहयोग की प्रक्रिया कोयला एवं इस्पात के माध्यम से शुरू हुआ। इन प्रयासो के बीच पहला बड़ा कदम उठाया गया। 1957 में उस साल यूरोपीय आर्थिक समुदाय, यूरोपीय इकॉनॉमिक कम्युनिटि एवं ई०ई०सी० की स्थापना की। इसमें फ्रांस, पं० जर्मनी, बेल्जियम, हालैण्ड, लग्जमवर्ग और इटली शामिल हुए। इन देशो ने एक साझा बाजार स्थापित किया। ग्रेट ब्रिटेन 1960 में इसका सदस्य बना। इन सभी प्रयासो के बीच हमे यह हमेशा ध्यान में रखना होगा कि सं०रा० अमेरिका का प्रत्यक्ष प्रभाव इन सभी देशो पर स्पस्ट रूप से बना रहा क्योकि युद्दोत्तर पुर्ननिर्माण में उसी के द्वारा सभी आर्थिक सहायता दिया जा रहा था।

द्वितीय महायुद्ध के बाद एक तीसरा क्षेत्र भी था, जहाँ नवीन आर्थिक सम्बन्ध विकसित हुआ वह क्षेत्र था एशिया और अफ्रीका के नवस्वतंत्र देशों का। 1947 में भारत के आजादी के साथ ही इन देशो में स्वतंत्रता की एक नई लहर पैदा हो गई और अगले 15 वर्षो में सभी देश लगभग आजाद हो गए। इन देशो पर तत्कालीन विश्व के दोनो महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति सं०रा०

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions
Empowering Technologies...

अमेरिका और सोवियत रूस अपना प्रभाव स्थापित करना चाहते थे। इस प्रयास में अमेरिका की सहायता विश्व बैंक और अनतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भरपूर रूप से की जबकि रूस अपने विचारो और राजनैतिक शक्ति का इस्तेमाल ज्यादा कर रहा था। चूँकि ये सभी नवस्वतंत्र देश लम्बे औपनिवेशिक शासन के दौरान आर्थिक रूप से विल्कुल विपन्न हो गए थे इसलिए अपनी स्वतंत्रा को बचाए रखने के लिए इन्हे उन दोनो देशो से आर्थिक और राजनैतिक दोनो प्रकार के सहयोग चाहिए था। दोनो देशो ने अपनी नीतिया और आर्थिक विचारो के अनुसार सहयोग किया, साथ ही अपना प्रभाव भी उन देशो पर बढ़ाया। इस प्रयास में अमेरिका का सहयोग वहाँ की बहुराष्ट्रीय कंपनियो ने भी किया। इसके उदाहरण के रूप में हम भारत के लौह इस्पात उद्योग को लेते है, जिसका विकास अमेरिका तथा उसके सहयोगी राष्ट्रो और सोवियत रूस दोनो के सहयोग से हुआ।

भारत का एक लौह-इस्पात कारखाना

(ग) भूमंडलीकरण आज के जीविकोपार्जन और भूमंडलीकरण का अन्तर्साम्य अध्ययन क्षेत्र :

भूमंडलीकरण-जीवन के सभी क्षेत्रों का एक अन्र्तराष्ट्रीय स्वरूप, जिसने दुनिया के सभी भागों को आपस में जोड़ दिया है-सम्पूर्ण विश्व एक बड़े गाँव के रूप में परिवर्तित हो गया है।

भूमंडलीकरण राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विश्वव्यापी समायोजन की एक प्रक्रिया है, जो विश्व के विभिन्न भागों के लोगों को भौतिक व मनोवैज्ञानिक स्तर पर एकीकृत करने का सफल प्रयास करती है अर्थात जीवन के सभी क्षेत्रों में

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions
Empowering Technologies...

लोगों के द्वारा किए जाने वाले क्रियाकलापो में विश्वस्तर पर पाया जानेवाला एकरूपता या समानता भूमंडलीकरण के अन्तर्गत आएंगा, जैसे वेश-भूषा और खान-पान के स्तर पर कुछ मौलिक विशेषताएँ विश्व के सभी देशों में समान रूप से पाई जा रही है।

नया शब्द
पूँजीवाद : पूँजी पर आधारित एक व्यवस्था जो बाजार और मुनाफा के उपर टिका है।

भूमंडलीकरण के उदय के विषय में इतिहासकारों और विचारको में काफी मतभेद रहा है कुछ विद्वानों का मानना है कि किसी न किसी रूप में भूमंडलीकरण की प्रक्रिया मानव इतिहास के आरम्भ से ही चल रही है और समय के साथ-साथ उसका स्वरूप बदलता रहा है, जबकि विद्वानों का दूसरा समूह भूमंडलीकरण को पूँजीवाद से जोड़कर देखता है, जिसका उदय आधुनिक काल में हुआ इस दृष्टि से उसका रिश्ता पूँजीवाद से गहराई से जुड़ा हुआ है। इन विचारों के आलोक में भूमंडलीकरण के उदय को 15वीं 16वीं शताब्दी के दौरान माना जा सकता है जो प्रत्यक्षतः आधुनिकीकरण और पूँजीवादी प्रवृति से जुड़ा हुआ है। 19वीं शताब्दी के मध्य से जब पूँजीवाद विश्वव्यापी व्यवस्था बन गया, भूमंडलीकरण का स्वरूप भी व्यापक होता गया। इस समय पूँजी का निर्यात अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों की एक मुख्य विशेषता बन गई और व्यापार का परिमाण भी काफी बढ़ा।

नया शब्द :
शीत युद्ध : राज्य नियंत्रित और बाजार नियंत्रित अर्थव्यवस्था वाले देशों के नेतृत्वकर्ता देशों सोवियत रूस और स० रा० अमेरिका के बीच का सामरिक तनाव

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया उन्नसवीं सदी के मध्य से लेकर प्रथम महायुद्ध के आरंभ तक काफी तीव्र रहा। इस दौरान माल (वस्तु) पूँजी और श्रम तीनों का अंतर्राष्ट्रीय प्रवाह लगातार बढ़ता गया। इसमें इस दौरान विकसित नवीन तकनीकों का भी उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा। परंतु 1914 से 1991 ई० के बीच भूमंडलीकरण की प्रक्रिया धीमी हो गई। दो महायुद्धों, साम्यवादी क्रांति, सोवियत संघ और उसके गुट का निर्माण, उपनिवेशवाद की समाप्ति और भारत जैसे अनेक नवस्वतंत्र देशों का उदय और उसके द्वारा अपने बाजार और संसाधनों को अपने स्वतंत्र आर्थिक विकास के लिए आरक्षित करना तथा शीत युद्ध के कारण भूमंडलीकरण की सम्पूर्ण प्रक्रिया बाधित रहा। 1929-1930 के बीच का महामंदी ने तो इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को ही बिल्कुल स्थिर कर दिया तथा व्यापार और पूँजी का प्रवाह बिल्कुल रोक दिया। 1991 के बाद जब सोवियत साम्यवादी गुट का अवसान हो गया तो पूँजीवाद की यह

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions
Empowering Technologies...

बिल्कुल नवीन अवधारणा का विकास पुनः एक नये स्वरूप के साथ हुआ।

भूमंडलीकरण नामक शब्द का सबसे पहले इस्तेमाल संयुक्त राज्य अमेरिका के जॉन विलियम्सन ने 1990 में किया। दक्षिण अमेरिका में संयुक्त राज्य अमेरिका के द्वारा इसे अपनी महत्वपूर्ण आर्थिक नीति के रूप में पहले आरंभ किया। वे देश 1980 के दशक के बाद आर्थिक रूप से काफी जर्जर हो गए थे। धीरे-धीरे यह सम्पूर्ण विश्व के अर्थतंत्र का नियामक हो गया। इसके प्रभाव को कायम करने में विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, 1995 में अस्तित्व में आया विश्व व्यापार संस्था (WTO) तथा पूँजीवादी देशों की बड़ी-बड़ी व्यापारिक और औद्योगिक कंपनियाँ (बहुराष्ट्रीय कंपनी) का बहुत बड़ा योगदान था। साथ ही अपने आर्थिक हितों को सुरक्षित और संरक्षित रखने के लिए गठित क्षेत्रीय संगठनों जैसे जी-8, ओपेक, आसियान, यूरोपीय संघ, जी-15, जी-77, दक्षेस (सार्क) इत्यादि का भी भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बहुराष्ट्रीय कंपनी : कई देशों में एक ही साथ व्यापार और व्यवसाय करने वाले कंपनियों को बहुराष्ट्रीय कंपनी कहा जाता है। १९२० के बाद से इस तरह की कंपनियों का उत्कर्ष हुआ जो द्वितीय महायुद्ध के बाद काफी बढ़ा।

आज जीविकोपार्जन और भूमंडलीकरण का अन्तर्साम्य संबंध

वर्तमान परिदृश्य में भूमंडलीकरण के प्रभाव को आर्थिक क्षेत्र में अधिक स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद से सैनिक शक्ति को आर्थिक शक्ति द्वारा पीछे छोड़ दिया गया। अब किसी भी देश की शक्ति और क्षमता का आकलन उसके पास मौजूद हथियारों या सैनिकों की संख्या के बजाय नागरिकों की समृद्धि के आधार पर किया जाने लगा। अर्थव्यवस्था के शक्ति को स्थापित करने में भूमंडलीकरण के आर्थिक स्वरूप का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। मुक्त बाजार, मुक्त व्यापार, खुली प्रतिस्पर्द्धा

कॉल सेंटर

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...
© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE REPUBLISHED

बहुराष्ट्रीय निगमों (कंपनी) का प्रसार उद्योग तथा सेवा क्षेत्र का निजीकरण उक्त आर्थिक भूमंडलीकरण के मुख्य तत्व हैं। इस प्रक्रिया का एक मात्र लक्ष्य विश्व को एक मुक्त व्यापार क्षेत्र में परिवर्तित करना है जिसमें महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संगठन और संस्थाओं तथा क्षेत्रीय संघों की बड़ी भूमिका है।

अभी जिस समय में हम रह रहे हैं उसमें आर्थिक भूमंडलीकरण का प्रभाव आम जीवन पर साफ दिख रहा है। भूमंडलीकरण के कारण जीवीकोपार्जन के क्षेत्र में जो बदलाव आया है

उसकी झलक शहर कस्बा और गाँव सभी जगह साफ दिखाई पड़ रहा है। वर्तमान दौर में 1991 के बाद सम्पूर्ण विश्व में सेवा क्षेत्र का विस्तार काफी तीव्र गति से हुआ है, जिससे जीवीकोपार्जन के कई नए क्षेत्र खुले हैं। सेवा क्षेत्र का मतलब वैसी आर्थिक गतिविधियों से है जिसमें लोगों से विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करने के बदले पैसा लिया जाता है, जैसे यातायात की सुविधा (बस, हवाई जहाज, टैक्सी) बैंक और बीमा क्षेत्र में दी जाने वाली सुविधा, दूरसंचार और सूचना तकनीक (मोबाइल, फोन, कम्प्यूटर, इंटरनेट) होटल और रेस्टोरेंट, बड़े शहरों में शॉपिंग मॉल– (वैसा स्थान जहाँ एक ही जगह जीवन की सारी अनिवार्य आवश्यकता की वस्तु मिलती है), कॉल सेंटर (वैसी जगह जहाँ किसी कंपनी से संबंधित सभी क्रियाकलापों के विषय में फोन या इंटरनेट पर जानकारी दी जाती है,) इत्यादि। उपरोक्त वर्णित सभी क्षेत्र भूमंडलीकरण के दौरान काफी तेजी से फैला है जिससे लोगों को जीवीकोपार्जन के कई नवीन अवसर मिले हैं।

आप गाँव में रहते हो या शहर में, देखते होगे कि मोबाइल फोन और उससे सम्बन्धित सुविधाओं को देने के लिए कई छोटी–बड़ी दुकाने खुल रही है जिसमें कई लोग कार्य करते हैं। उन सभी को अच्छी आमदनी होती है। इस प्रकार कई निजी (प्राईवेट) कंपनी या बैंक (रिलायंस, आई. सी.आई.सी.आई. बैंक निजी क्षेत्र की सबसे बड़ी बैंक) के लोग आप जैसों को लाभकारी योजनाओं में निवेश करने के लिए प्रेरित करते मिल जाएगें। यही है बीमा क्षेत्र का विस्तार। इससे जुड़कर गाँव या शहर के लाखो लोग रोजगार

मोबाइल पर बात करते हुए आम आदमी

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions
Empowering Technologies...
© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

प्राप्त कर रहे हैं। भारत या बिहार के पर्यटक स्थल (बोध गया) के आस-पास रहने वाले लोगों के लिए इस दौर में रोजगार के कई नवीन अवसर उपलब्ध हुए जैसे टुर एवं ट्रेवल एजेंसी (यातायात की सुविधा) रेस्टोरेंट, रेस्ट हाउस, आवासीय होटल इत्यादि। सूचना और संचार के अन्तर्गत ही आप देखते होंगे की निजी डाक सेवा (कोरियर सेवा) साथ-साथ ही तीन-चार कम्प्यूटर लगाकर एक दुकान में तुरन्त तस्वीर दे देना, लिखित सामग्री को छापना, परीक्षा परिणाम की जानकारी देना, नवीन सूचना को प्रदान करना इत्यादि कई ऐसी चीजों को एक साथ किया जाता है। इस क्षेत्र में भारत और बिहार के हजारों लोगों को रोजगार मिला है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि आर्थिक भूमंडलीकरण ने हमारी आवश्यकताओं के दायरे को और उसी अनुरूप में बढ़ाया है। उसकी पूर्ति हेतु नए-नए सेवाओं का उदय हो रहा है जिससे जुड़कर लाखो लोग अपनी जीविका चला रहे हैं। इस प्रक्रिया ने लोगों के जीवन स्तर को भी बढ़या है। वर्तमान दौर में भूमंडलीकरण और जीवकोपार्जन के बीच यही अर्न्तसाम्य है।

इस तरह आधुनिक युग में अर्थ व्यवस्था के अन्तर्गत विश्व अर्थतन्त्र और विश्व बाजार के जिस स्वरूप की चर्चा हमलोग कर रहे थे उसने आर्थिक के साथ-साथ राजनैतिक जीवन को भी गहराई से प्रभावित किया। 1919 के बाद विश्वव्यापी अर्थतंत्र में यूरोप के स्थान पर संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस का प्रभाव बढ़ा, जो द्वितीय महायुद्ध के बाद विश्व व्यापार और राजनैतिक व्यवस्था में निर्णायक हो गया। 1991 के बाद विश्व बाजार के अन्तर्गत ही एक नवीन आर्थिक प्रवृति भूमंडलीकरण का उत्कर्ष हुआ जो निजीकरण और आर्थिक उदारीकरण से प्रत्यक्षतः जुड़ा था। भूमंडलीकरण ने सम्पूर्ण विश्व के अर्थतंत्र का केन्द्र बिन्दु संयुक्त राज्य अमेरिका को बना दिया। उसकी मुद्रा डॉलर, पुरे विश्व की मानक मुद्रा बन गई। उसकी कंपनीयों को पुरी दुनिया में कार्य करने की अनुमति मिल गई अर्थात भूमंडलीकरण, उदारीकण और नीजिकरण ने अमेरिका केन्द्रित विश्व अर्थव्यवस्था को जन्म दिया। आज विश्व एक ध्रुवीय स्वरूप में बदलकर प्रभावशाली देश सं० राज्य अमेरिका के आर्थिक नीतिओं के हिसाब से चल रहा है। आर्थिक क्षेत्र में भूमंडलीकरण ने अमेरिका के नवीन आर्थिक साम्राज्यवाद को जन्म दिया जिसका असर आज सम्पूर्ण विश्व में महसूस किया जा रहा है।

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime

Abdiel Solutions
Empowering Technologies...

अभ्यास

बहुविकल्पी प्रश्न

1. प्राचीन काल में किस स्थल मार्ग से एशिया और यूरोप का व्यापार होता था?
   (क) सूती मार्ग (ख) रेशम मार्ग
   (ग) उत्तरा पथ (घ) दक्षिण पथ
2. पहला विश्व बाजार के रूप में कौन सा शहर उभर कर आया?
   (क) अलेग्जेंन्ड्रिया (ख) दिलमुन
   (ग) मैनचेस्टर (घ) बहरीन
3. आधुनिक युग में अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में होने वाली सबसे बड़ी क्रांति कौन सी थी?
   (क) वाणिज्यिक क्रान्ति (ख) औद्योगिक क्रान्ति
   (ग) साम्यवादी क्रान्ति (घ) भौगोलिक खोज
4. 'गिरमिटिया मजदूर' बिहार के किस क्षेत्र से भेजे जाते थे?
   (क) पूर्वी क्षेत्र (ख) पश्चिमी क्षेत्र
   (ग) उत्तरी क्षेत्र (घ) दक्षिणी क्षेत्र
5. विश्व बाजार का विस्तार आधुनिक काल में किस समय से आरंभ हुआ ?
   (क) 15 वी शताब्दी (ख) 18 वी शताब्दी
   (ग) 19 वी शताब्दी (घ) 20 वी शताब्दी
6. विश्वव्यापी आर्थिक संकट किस वर्ष आरंभ हुआ था ?
   (क) 1914 (ख) 1922
   (ग) 1929 (घ) 1927
7. आर्थिक संकट (मंदी) के कारण यूरोप में कौन सी नई शासन प्रणाली का उदय हुआ ?
   (क) साम्यवादी शासन प्रणाली (ख) लोकतांत्रिक शासन प्रणाली
   (ग) फासीवादी नाजीवादी शासन (घ) पूँजीवादी शासन प्रणाली
8. ब्रेटन वुडस सम्मेलन किस वर्ष हुआ ?
   (क) 1945 (ख) 1947
   (ग) 1944 (घ) 1952

© BSTBPC WEB COPY NOT TO REPUBLISHED

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

9. भूमंडलीकरण की शुरूआत किस दशक में हुआ?

(क) 1990 के दशक में (ख) 1970 के दशक में

(ग) 1960 के दशक में (घ) 1980 के दशक में

10. द्वितीय महायुद्ध के बाद यूरोप में कौन सी संस्था का उदय आर्थिक दुष्प्रभावों को समाप्त करने के लिए हुआ ?

(क) सार्क (ख) नाटो

(ग) ओपेक (घ) यूरोपीय संघ

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें ।

1. अलेग्जेक्ड्रीय नामक पहला विश्व बाजार .... के द्वारा स्थापित किया गया।
2. विश्वव्यापी आर्थिक संकट .... देश से आरंभ हुआ।
3. .... नामक सम्मेलन के द्वारा विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना हुई?
4. आर्थिक संकट से विश्व स्तर पर .... नामक एक बड़ी सामाजिक समस्या उदित हुआ?
5. .... ने 1990 के बाद भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को काफी तीव्र कर दिया?

सही मिलान करें स्तम्भ 'क' से स्तम्भ 'ख' का

	स्तम्भ 'क'	स्तम्भ 'ख'
(क)	औद्योगिक क्रान्ति	जर्मनी
(ख)	हिटलर का उदय	इंग्लैण्ड
(ग)	विश्व आर्थिक मंदी	1944
(घ)	विश्व बैंक की स्थापना	1929
(ड.)	भूमंडलीकरण की शुरूआत	प्राचीन काल
(च)	विश्व बाजार की शुरूआत	1990 के बाद

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED
© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions Empowering Technologies...

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न (२० शब्दों में उत्तर दें)

1. विश्व बाजार किसे कहते हैं?
2. औद्योगिक क्रान्ति क्या है?
3. आर्थिक संकट से आप क्या समझते हैं?
4. भूमंडलीकरण किसे कहते हैं?
5. ब्रेटेन वुड्स सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य क्या था?
6. बहुराष्ट्रीय कंपनी क्या है?

लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्दों में उत्तर दें)

1. 1929 के आर्थिक संकट के कारणों को संक्षेप में स्पष्ट करें।
2. औद्योगिक क्रान्ति ने किस प्रकार विश्व बाजार के स्वरूप को विस्तृत किया?
3. विश्व बाजार के स्वरूप को समझाएँ।
4. भूमंडलीकरण में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के योगदान (भूमिका) को स्पष्ट करें।
5. 1950 के बाद विश्व अर्थव्यवस्था के पुर्ननिर्माण के लिए किए जाने वाले प्रयासों पर प्रकाश डालें।
6. भूमंडलीकरण के भारत पर प्रभावों को स्पष्ट करें।
7. विश्व बाजार के लाभ हानि पर संक्षिप्त टिप्पणि लिखें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (१५० शब्दों में उत्तर दें)

1. 1929 के आर्थिक संकट के कारण और परिणामो को स्पस्ट करे।
2. 1945 से 1960 के बीच विश्वस्तर पर विकसित होने वाले आर्थिक संबंधों पर प्रकाश डालें।
3. भूमंडलीकरण के कारण आमलोगो के जीवन में आने वाले परिवर्त्तनों को स्पस्ट करें।
4. 1919 से 1945 के बीच विकसित होने वाले राजनैतिक और आर्थिक संबंन्धों पर टिप्पणी लिखे ।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime

Abdiel Solutions
Empowering Technologies...

5. दो महायुद्धो के बीच और 1945 के बाद औपनिवेशिक देशों में होने वाले राष्ट्रीय आन्दोलनो पर एक निबंध लिखे।

वर्ग में परिचर्चा करे :

1. भूमंडलीकरण ने किस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रभाव बढ़ाया ? कुछ उदाहरणों से इसे स्पस्ट करते हुऐ अपने सहपाठियो से शिक्षक की उपस्थिति में परिचर्चा करें ।
2. अपने द्वारा इस्तेमाल में लाई जाने वाली उन वस्तुओं के विषय में वर्ग में चर्चा करें जो सम्पूर्ण विश्व मे मिलता है । इसमे अपने शिक्षक का सहयोग ले ।

© BSTBPC
WEB COPY ,NOT TO BE PUBLISHED

© Copy right received only to BSTBPC, Govt of Bihar and Abdiel Solutions (www.absol.in). Publishing (web/App/Books) will be crime
Abdiel Solutions
Empowering Technologies...